प. पू. अष्टांग निमितज्ञ, मंत्रविद्या, चक्रवर्ती आर्षमार्ग संरक्षक, भारत गौरव, अभिनय पुज्यपाद, जगदगुरु गणाधिपती, गणधराचार्य

१०८ कुंथुसागर जी महाराज

आरती एवं भजन संग्रह

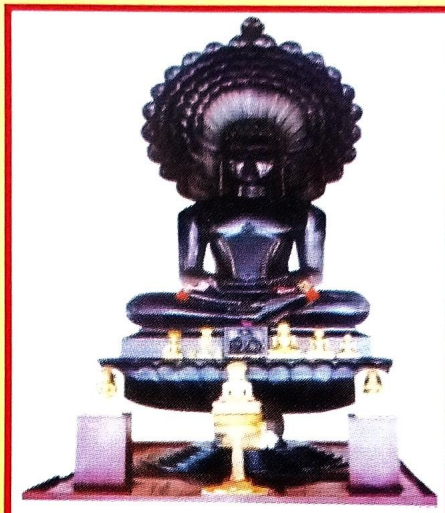

श्री कलीकुंड पार्श्वनाथ भगवान,
कुन्थुगिरी

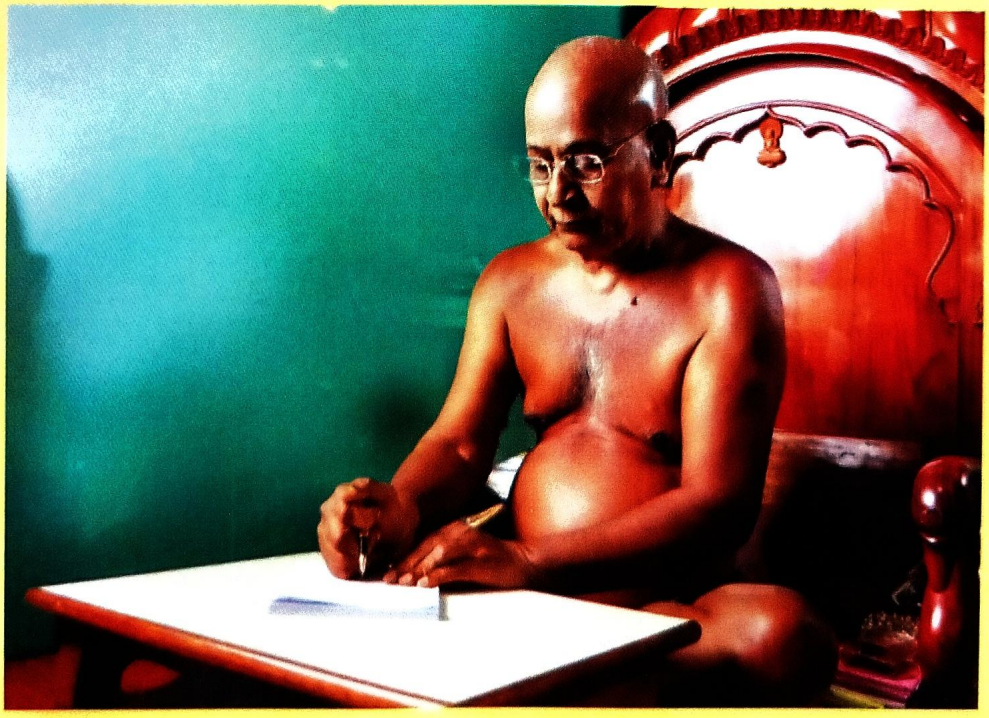

श्री गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागर विद्या शोध संस्थान

रजि. नं. : ई 1644 कोल्हापूर दि.26/09-2002

॥ पंच परमेष्ठी की आरती ॥

इह विधि मंगल आरती कीजै, पंच परम पद भज सुख लीजै ॥ टेक ॥
पहली आरती श्रीजिनराजा, भव-दूषि पार उतार जिहाजा ॥इह.॥
दुसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटे भव-फेरी ॥इह.॥
तिजी आरती सूर मुनिन्दा, जनम-मरण-दुःख दूर करिन्दा ॥इह.॥
चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया ॥इह.॥
पांचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी ॥इह.॥
छट्टी ग्यारह प्रतिमाधारी, क्षावक वन्दो आनन्द-कारी ॥इह.॥
सातवीं आरती श्रीजिनवाणी, ज्ञानत सुरग-मुकति-सुखदानी ॥इह.॥
आठवीं आरती बाहुबली स्वामी, करे तपस्या हुवे मोक्षगामी ॥इह.॥
संध्या करके आरती कीजै, अपनो जनम सफल कर लीजै।
जो कोई आरती करे-करावे, सो नर-नारी अमर पद पावे ॥
सोने का दिपक कपुर की बाती, जगमग ज्योति जले सारी राती ॥

॥ श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती ॥

ॐ जय पारस देवा प्रभु जय पारस देवा ।
सुर नर मुनि जन तुम चरनन की, करते नित सेवा ॥ ॐ जय ॥
पौषवदी ग्यारस काशी में, आनन्द अति भारी ।
अश्वसेन घर वामा के उर, लीनों अवतारी ॥ ॐ जय ॥
श्याम वर्ण नव हस्त काय पग, उरग लखन सोहे ।
सुरकृत अति अनुपम पट भूषण, सबका मन मोहे ॥ ॐ जय ॥
जलते देखे नाग नागनी को, पढ़ नवकार दिया ।
हरा कमठ का मान, ज्ञान का भान प्रकाश किया ॥ ॐ जय ॥
माता पिता तुम स्वामी मेरे, आश करूँ किसकी ।
तुम बिन दूजा और न कोई, शरण गहूँ जिसकी ॥ ॐ जय ॥
तुम परमातम, तुम अध्यात्म तुम अन्तर्यामी ।
स्वर्ग मोक्ष पदवी के दाता, त्रिभुवन के स्वामी ॥ ॐ जय ॥
दीनबंधु दुख हरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे ।
दे शिवपुर का वास, दास द्वार खड़ा तेरे ॥ ॐ जय ॥
विषय विकार मिटाओ मन का, अर्ज सुनो दाता ।
सेवक हूय कर जोड़ प्रभु के, चरणों चित्त लाता ॥ ॐ जय ॥

॥ जगदगुरु १०८ श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव की आरती ॥

कुन्थुसागर की गुण आगर की, ले मंगल दीप जलाय हो।
आज उतारु आरतियाँ ...

रेवाचन्द्र श्रीमती सोहनबाई के गर्भ विषे गुरु आये
बठेड़ा गांव में जन्म लियो, आतम ज्योति जलाय हो -२
गुरुवर आतम ज्योति जलाये हो .....

न रागी की न द्वेषी की, ले आतम ज्योति जलाय हो
आज उतारु आरतियाँ ...

गुरु उपवास व्रतों के धारी आतम ब्रह्म बिहारी
खडगधार पद पथ पर चलकर शिथिलाचार निवारी
गुरुवर शिथिलाचार निवारी
गृह त्यागी की वैरागी, ले दीप सुमन का थाल हो
आज उतारु आरतियाँ ...

गुरुवर आज नयन से लखकर अलौकिक सुख पाया
भक्ति भाव से आरती करके फूला नही समाया
गुरुवर फूला नही समाया

ऐसे ऋषिवर को ऐसे मुनिवर को ऐसे वंदर बारंबार हो
जब तक सुरज चाँद रहेगा, कुन्थुसागरजी का नाम रहेगा
जब तक कुंथुगिरी रहेगा, कुन्थुसागरजी का नाम रहेगा
ऐसे ऋषिवर को ऐसे मुनिवर को ऐसे वंदर बारंबार हो
आज उतारु आरतियाँ ...

।। गुरुवर की आरती ।।

(तर्ज :- माही न माही मुण्डेर पे तेरी)

कुन्थुगिरि के भाग्य विधाता, चरणो मे तेरे आये,
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले, मंगल आरती गाये ।
सूरिवर कुन्थुसागर की जय, मुनिवर कुन्थुसागर की जय ।।ध्रुवपद।।

बाठेडा में जन्म लियो है, सोहनदेवी मैया ।
आगमज्ञाता पिता तुम्हारे, नाम था पावन रेवा ।
बाल कन्हैया की लीला लख, परिजन मनमुसकाये ।
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले मंगल आरती गाये ।
सूरिवर कुन्थुसागर की जय, मुनिवर कुन्थुसागर की जय ।।१।।

महावीरकीर्ति सूरिवर से, भेष दिगम्बर धारा ।
विमलसिन्धु से सुरिपद पाकर, निज आतम संस्कारा ।
गुरुवर से गणधर पाकर, भविजन पार कराये ।
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले, मंगल आरती गाये ।
सुरिवर कुन्थुसागर की जय, मुनिवर कुन्थुसागर की जय ।।२।।

दीक्षा-शिक्षा देय भव्य को, जिनवृष रक्षा करते ।
बिन मांगे ही सब भक्तों की झोली निशदिन भरते ।
भारत गौरव स्वात्महितेषी, तव पद शीश नमाये ।
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले, मंगल आरती गाये ।
सुरिवर कुन्थुसागर की जय, मुनिवर कुन्थुसागर की जय ।।३।।

आर्षमार्ग के संरक्षक तुम, मन्त्रशास्त्र के ज्ञाता ।
सुविधियुत तप-त्याग करे तुम, आत्म तत्व के ध्याता ।
रानीला अणिन्दा आदिक, तीर्थक्षेत्र चमकाये ।
स्वर्णथाल में रत्नदीप ले, मंगल आरती गाये ।
सुरिवर कुन्थुसागर की जय, मुनिवर कुन्थुसागर की जय ।।४।।

॥ प.पु.ग.ग. आचार्य श्री १०८ कुन्थुसागरजी की आरती ॥

हम सब मिलकर आरती गाए, बाठेड़ा के लाल की।
महावीर के अवतारी, श्री कुंथु सिंधू महान की।
जय बोलो गुरुदेव की, कुंथु सिंधु महान की -२।

बाठेडा में जन्मे गुरुवर, रेवाचंद जी प्यारे थे -२
सोहन माँ बलिहार हुई, जब उनके तुम उजियारे थे -२
द्वार द्वार में बजी बधाई, जय हो दया निधान की
हम सब मिलकर ..... जय बोलो गुरुदेव .....

बड़े हुए जब कुंथु गुरुवर, आगम का तुम ज्ञान लिये-२
महावीर किर्ती मुनिवर ने, दीक्षा दे उपकार किये -२
इन्हे देखकर सब जन बोले, भारत पूत महान की
हम सब मिलकर ..... जय बोलो गुरुदेव .....

तंत्र मंत्र की शिक्षा पाकर, भक्तो का कल्याण किया -२
भव्य जीव को दीक्षा देकर, मोक्ष मार्ग पर बड़ा लिया -२
विमल गुरु सा वात्सल्य पाकर महिमा गाये आपकी
हम सब मिलकर .... जय बोलो गुरुदेव .....

पद्मा माँ ने स्वप्न दिखाकर, कुंथुगिरी बनवाई थी -२
जीवों ने आकर के यहां पर, धुली सर पे लगाई थी -२
फैल रही है नव जीवन में, महिमा आपके नाम की।
हम सब मिलकर .... जय बोलो गुरुदेव .....

॥ श्री पद्मावती की आरती ॥

पद्मावती माता दर्शन की बलिहारियाँ ।
चक्रेश्वरी माता दर्शन की बलिहारियाँ ॥

पार्श्वनाथ महाराज बिराजे मस्तक ऊपर थारे ।
इन्द्र नरेन्द्र धरनेन्द्र सभी मिल खडे नित द्वारे ॥

जो जिव थारो शरणो लिनो, सब संकट हर लीनो ।
पुत्र पोत्र धन सम्पति देकर, मंगलमय कर दिनो

डाकिन शाकिन भूत भवानी नाम लेत भग जावे ।
बात चित कफ रोग मिटे और तन सुखमय हो जावे ॥

जब जब पीड़ पड़ी भक्तो पर, रक्षा तुमने किनी ।
बेरी का अभिमान चुरकर इज्जत दुगनी कीनी ॥

दीप धूप और पुष्पहार ले, हम दर्शन को आये ।
दर्शन करके मात तुम्हारे, मन वांछित फल पाये ॥

पद्मावती माता दर्शन की बलिहारियाँ ।
चक्रेश्वरी माता दर्शन की बलिहारियाँ ॥

जिन शासन माता दर्शन की बलिहारियाँ ।
मातेश्वरी माता दर्शन की बलिहारियाँ ॥

।। भजन ।।

मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो का आके दुलार दे दे ।
चरण आया शरण आया मेरा संताप हर लो ।।
मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो का आके दुलार दे दे ।।

मैय्या दर्शन को तेरे मै आज आया ।
तुझे चुनरी उड़ाने मै लाल लाया ।। -२
लाया मेवा मिष्ठान और आम लाया -२
थाली भर भर के मैय्या चणा लाया ।
चरण आया शरण आया मेरा संताप हर ले ।
मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो को आके दुलार दे दे ।।

मैय्या तु है दयालू तु सब जानती ।
तेरे हाथों मे भक्तो की है पालकी ।। - २
तु ही ज्वाला चक्रेश्वरी माता है ।
तेरे चरणो में भक्तो का माथा है ।। -२

चरण आया शरण आया मेरा संताप हर ले ।
मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो का आके दुलार दे दे ।।

जिसने मांगा है मैय्या तु पुर्ण करती ।
खाली झोली को भरके खुशहाल करती ।। -२
तेरे दर से खाली कोई ना जाये । -२
रोता आये वो हंसता ही लौट जाये ।। -२
चरण आया शरण आया मेरा संताप हर ले ।
मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो का आके दुलार दे दे ।।

मैय्या नागो पर बेठी तू सुंदर है ।
तेरे मस्तक पर पारस का मंदिर है ।। -२
अपने भक्तो का इतना तु काम कर दे ।
चिंता हर ले सभी को खुशहाल कर दे ।। -२
चरण आया शरण आया मेरा संताप हर ले ।
मेरी मैय्या पद्मावती माता तू ।
अपने भक्तो का आके दुलार दे दे ।।

।। जगदगुरु १०८ श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव की वन्दना ।।

गुरुवर हम आये हैं, हमें अपनी शरण ले लो।
भटके है राहों से, हमें ज्ञान किरण दे दो ।।
सुख की अभिलाषा में, संसार संवारा है।
सबको माना अपना, यही दोष हमारा है ।।
शुद्धातम हो अपना, अज्ञान तिमिर हर लो ।।१।।
गुरुवर.....

करमों के सताये हैं, हर भव रुलाये हैं।
चौरासी के चक्कर मे, कई जन्म गंवाये है।
भव बन्धन काट सकें वह शक्ति हमें दे दो ।।२।।
गुरुवर.....

तोड़ा जग से नाता, तुझे सब कुछ माना है।
तुम ही तो हितेषी हो, दिल से पहचाना है ।।
हम दास है चरणों के, पहचान अमर कर दो ।।३।।
गुरुवर .....

बस एक ही इच्छा है, गुरु नित्य रहें उर में ।
गुरु नित्य रहें उर में, मम आतम ज्योति जगे ।।
यही एक तमन्ना है, मुझे शाश्वत सुख दे दो ।।४।।
गुरुवर.....

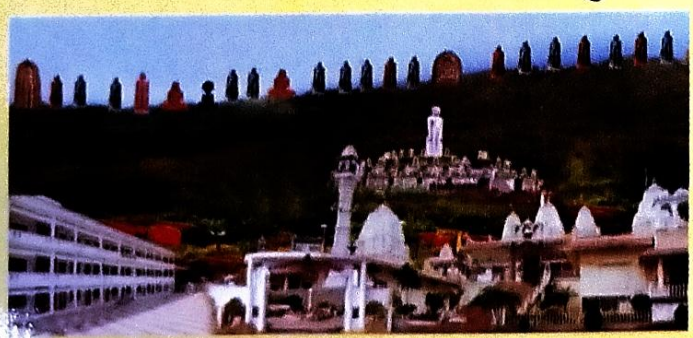

हातकणगले - रामलिंग रोड़, श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी, मु.पो. आळते - ४१६१०९
ता. हातकणगले, जिला कोल्हापूर
Mob. 9921791008, 9921741008, 9823341008
E mail : shreekunthugiri1008@gmail.com